RESEARCH PAPER | Sociology | Volume : 3 | Issue : 6 | June 2013 | ISSN - 2249-555X

Vaishvikaran Ka Bhartiya Samaj Evam Sanskriti Par Prabhav

वैश्वीकरण का भारतीय समाज एवं संस्कृति पर प्रभाव

KEYWORDS: Vaishvikaran

Dr. Anup Chaturvedi

Course Co-ordinator Indian Science Communication, Society (ISCOS), Lucknow

ABSTRACT वैष्वीकरण या भूमण्डलीय एक बहुआयामी खुली प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत एक ओर व्यापार का अर्न्तराश्ट्रीयकरण होता है तो दूसरी ओर सामाजिक एवं सांस्कृतिक विचार धाराओं का विष्वव्यापी फैलाव होता है। वैष्वीकरण का तात्पर्य पूरे विष्व के एकीकरण से है, जो प्रमुखत: व्यापार उद्योग एवं वित्तीय नीति-रीति से सम्बन्धित है।

ष्वीकरण वस्तुत: उच्च तकनीकी पूंजीवाद का नया अवतरण १ एवं आर्थिक षक्तियों, राश्ट्रों के मध्य षक्ति सम्बन्धों एवं उनकी सामाजिक संस्कृति का एक असहज अर्न्तसम्बन्ध है।२ इसे पूंजीवाद विस्तार के द्वितीय चरण के रूप में व्याख्यापित किया जाता है।३ उपर्युक्त विवेचनाओं के सन्दर्भ में यह कहा जा सकता है कि वैष्वीकरण पूंजीवादी व्यवस्था में तृतीय विष्व के देषों पर अपने बाजार के नियंत्रण का एक सुनियोजित प्रयास है। इसके अन्तर्गत आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं सैनिक व्यवस्था का इस प्रकार से मिश्रण हुआ है जिसने मनुश्य के दृश्टिकोण एवं जीवन के विभिन्न पक्षों में आष्चर्यजनक परिवर्तन कर दिया है।

वैष्वीकरण के फलस्वरूप जिस तरह दुनिया तेजी से बदल रही है, उसके स्वरूप की समझ को लेकर तमाम वैचारिक मतभेद है क्योंकि यह साफ तौर पर दिखाई पड़ रहा है कि साहित्य, समाज, राजनीति, षिक्षा एवं स्वास्थ्य सभी कुछ लगातार आर्थिकी षक्तियों के षिकार हो रहे हैं। आर्थिक पहल को तो हम सीधे लक्ष्य कर लेते हैं, लेकिन वैष्वीकरण के फलस्वरूप जिस तरह हमारे समाज एवं संस्कृति के मूल्य छिनते जा रहे हैं, वह हमारे विचारों के केन्द्र में नही हैं। अत: वैष्वीकरण के आनुभूतिक पक्ष पर हमें सम्यक दृश्टि डालने की आवष्यकता है क्योंकि इसे लेकर बहुत भ्रम की स्थिति है। जहाँ कतिपय लोग इसमें 'वसुधैव कुटुम्बकम' का रूप देख रहे हैं वहीं कुछ लोग वैष्वीकरण बनाम वसुधैव कुटुम्बकम के रूप में और कुछ लोग इसे अन्य तरीके से परिभाशित करने लगे हैं। भारत की जो वसुधैव कुटुम्बकम की विष्व दृश्टि है उसका और जनता के स्वप्नों का बाजारी करण हो रहा है। डॉ. देवव्रत चौबे ने अपने एक आलेख में इंगित किया है कि भारत विष्व को परिवार मानता है। किन्तु पष्चिम का वैष्वीकरण विष्व को बाजार मानता है। बाजार के लिए सब कुछ अर्थ ही है। मानव भी अर्थ के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है किन्तु परिवार में त्याग की भावना विद्यमान रहती है, उसका आधार अद्वैत है। हम सब एक ही हैं, इस भावना से परिवार ओत प्रोत रहता है। भारतीय परिवार ससीम से असीम की ओर जाता है।४ अत: वैष्वीकरण नाम के षाब्दिक अर्थ पर न जाकर उसकी प्रचलित प्रवृत्तियों के आधार पर देखा जाये तो इस षब्द का अर्थ संकुचित हो जाता है।

वैष्वीकरण की प्रकिया के अन्तर्गत भारतीय समाज एवं संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में एक दृश्टि भ. ारतीय समाज पर डालें तो '' भारतीय समाज यद्यपि स्थिर समाज है, उसके मानवीय संबंधों में बहाव नहीं है, परिवार और रिष्ते-नाते सीमेन्ट की तरह मजबूत हैं। रिष्तों की भूमिकायें एवं उनके कर्तव्य एकदम पत्थर की लकीर हैं। जातियों की ऊँच-नीच समाज में है। बड़े भाई और छोटे भाई, सास-बहू, पति-पत्नी हर रिष्ते में जाति-पाँति जैसा भेदभाव है। कारखानों में नौकर-मालिक के बीच जमीन-आसमान का फर्क है। ५ अत: स्पश्ट है कि भारतीय कुटुम्ब में भी भेद दृश्टि है। जिस समानता को राजनैतिक स्वतंत्रता, आर्थिक विकास और सामाजिक समता को पष्चिम वालों ने पाया वह भारत की उपज नहीं हैं। परंतु वसुधैव कुटुम्बकम का यह भी अर्थ नहीं है, वहाँ उसका अर्थ विष्व मानवता से है और यही दृश्टिकोण इतिहास परम्परा, पष्चिमी संस्कृति, भारतीय संस्कृति सभी के प्रति है।६ स्पश्ट है कि आज पूरी दुनिया में जो समानता की हवा है वह मानवतावादी नहीं है क्यों कि वैष्वीकरण का अपना निष्चित प्रयोजन है। भौतिक समृद्धि एवं विध्वंषकारी ऊर्जा से सम्पन्न देष अपने क्षुद्र स्वार्थो की पूर्ति के लिए बाजारवाद के द्वारा भोगवादी संस्कृति को जन्म दे रहे हैं। भोगवाद पृथकत्व को जन्म देता है। पृथकत्व समाज, परिवार, देष को खण्ड-खण्ड में बाँटता है। बाजारवाद की सफलता भेद पर अवलम्बित है। अत: भारतीय समाज में भी भेद हावी है और पष्चिमी वैष्वीकरण में भी। भारतीय समाज पर वैष्वीकरण का उद्देष्य अधिक से अधिक अर्थोपार्जन करना है। वह हमारे अन्दर राग,द्वेश और मोह उत्पन्न करता है। हमारे जीवन को अन्धकारमय बनाकर बाजारवाद अपनी योजना को पूर्ण मानता है।८

अब हम संस्कृति की बात करते हैं। संपूर्ण मानव समाज के विकास की व्यश्टिमय एवं समश्टिमय उपलब्धियाँ ही संस्कृति है। संस्कृति एक सामाजिक विरासत है और संचय से विकसित होती है। ९ किसी समाज एवं राश्ट्र की श्रेश्ठतम उपलब्धियाँ ही संस्कृति है जिनसे समाज और राश्ट्र परिचित होता है।१० संस्कृति को समाज एवं सामाजिक संबधो की अधिश्ठात्री भी कहा गया है और समाज द्वारा निर्मित भी। यह विचारणीय पक्ष है कि समाज एवं संस्कृति का निर्माण एकाएक नहीं होता है। राश्ट्र के सभी अंगभूत घटक एक स्वर, एक लय, एक प्रीति, एक छंद और एक रस में स्पंदित होकर अपनी संस्कृति गढ़ते हैं।

वैष्वीकरण से आये बदलाव:-

वैष्वीकरण की प्रक्रिया द्वारा भारत वैष्वीकृत और अंतनिर्भर विष्व के सम्पर्क में आया।११ षौकत मियाँ की प्रसिद्ध चिकन-बिरयानी की जगह केंटुकी चिकन फ्राई की दुकानें दिखने लगी और लस्सी की जगह कोका-कोला की बोतलें। इलेक्ट्रानिक तरंगों ने मनमानी की और राश्ट्रभाशा - राजभाशा पर हमला हुआ। हिन्दी के षब्द प्रयोग और वाक्य विन्यास में अमेरिकी इंग्लिष घुस आई। सत्यम्, षिवम्, सुन्दरम् से जुड़ी भारतीय कला कौषलहीन हो गयी जो कि सौन्दर्य की परम अभिव्यक्ति थी। वह सिर्फ और सिर्फ सेक्सी स्त्री-पुरुश देह दर्षना हो गयी। बाजार ने सुन्दरता को अपनी जिद में ले लिया और बहुराश्ट्रीय कम्पनियों ने मिस यूनीवर्स और मिस वर्ल्ड भारतीय जनमानस में से चुने, जिन्हें कभी वे ब्लैक इंडियन कहते थे। यह वैष्विक अर्थव्यवस्था के नये शडयंत्र थे। १९९० के बाद भारत में शडयंत्र की बाढ़ आ गयी। षील, चरित्र, मर्यादा नो इंट्री की षिकार हुई। व्यक्ति और परिवार, परिवार और समाज तथा समाज एवं संस्कृति के रिष्ते तार-तार हो गये। बाजार भारत के नवधनाढ्यों की प्रेरणा व आदर्ष बन गया।१२

यह सत्य है कि वैष्वीकरण ने दुनिया को संरचनाओं और जानकारियों के बल पर देष-काल की सीमाओं से मुक्त किया है। वैष्वीकरण से संकीर्ण विचारों का प्रभाव जबरदस्त रुप से विघटित हुआ है। सषक्त मीडिया, एक जगह पर घटी किसी घटना को भी आनन-फानन में विष्व के कोने में पहुँचा देता है। इस प्रकार से देखें तो यह वह युग है जिसमें विष्व के किसी भी हिस्से में जो कुछ घटित हो रहा है, वह सामान्यत: छिपा नहीं रहता। यह प्रक्रिया सामान्य रूप से अपने परिणाम के तौर पर पुराने दकियानूसी विचारों को तिरोहित कर देती हैं।१३ मानवजीवन के प्रत्येक पहलू के सांस्कृतिक क्षेत्र में भी वैष्वीकरण के विकास की गति की अभिव्यक्ति चाहे वह सकारात्मक हो या नकारात्मक, स्पश्ट दिखाई देती हैं। आज उपग्रह चैनल, सिनेमा, संगीत, साहित्य आदि इसके जीवन्त प्रमाण हैं। इन्होंने न केवल क्षेत्रीय संस्कृति के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है अपितु विष्व में एकीकृत संस्कृति का मार्ग प्रषस्त किया है।

वैष्वीकरण से उत्पन्न समस्याएं :-

आज पति-पत्नी और अविवाहित जोड़ों से पैदा होने वाली सन्तानों के साथ एकल परिवार समाज के आदर्ष बन रहे हैं। बच्चों का समाजीकरण अभी ठीक से षुरु नहीं हुआ था कि वैष्विक दौर के उपभोक्तावाद ने बच्चों को एक उत्पाद बनाकर उनकी रातों की नींद उड़ा दी है। वर्तमान षोध निश्कर्शों के अनुसार देष के ४२ फीसदी बच्चे अनिद्रा के षिकार हैं।१४ आज के भारतीय मह. ानगरों में बच्चों का बढ़ता मोटापा एक चिन्ता का विशय है। सामाजिक सर्वेक्षण बताते हैं कि नगरों और महानगरों में भौतिक जीवन की बदलती वरीयताओं और अधिक काम के दबाव से माता-पिता और बच्चों के बीच संवाद का ढाँचा चरमरा गया हैं। सम्प्रति सूचना क्रान्ति से जुड़े तमाम माध्यम और वैष्विक संस्कृति बच्चों से उनका बचपन छीनकर उन्हें सीधे जवानी की दहलीज पर कदम रखने को मजबूर कर रहे हैं। वैष्विक दौड़ में मीडिया संस्कृति को आज बच्चों में ही बाजारवाद की संभावनायें अधिक नजर आ रही हैं। केबिल चैनल संस्कृति के जरिये बच्चों की भावनाओं के उद्वेलन तथा विज्ञापन संस्कृति से बालपन के विवेकहरण की प्रक्रिया को गति मिल रही है। दुखद यह है कि इस प्रक्रिया में विदेषी कम्पनियों के साथ-साथ भारतीय कम्पनियाँ भी सम्मिलित हैं। सामाजिक अध्ययनों से स्पश्ट है कि जितने भी विज्ञापन बन रहे हैं उनमें लगभग ९० प्रतिषत बाल केन्द्रित हैं।१५ इस सच्चाई से इंकार नहीं किया जा सकता कि मीडिया की उपभोक्तावादी संस्कृति ने लोगों में दमित इच्छाओं को उभारने का कार्य किया है।

नयी पीढ़ी के मध्य पनप रही हिंसा, अनिद्रा, कामुकता, अष्लीलता के मनो-सामाजिक द्वंद्व का समाजषास्त्र बताता है कि आजादी के आन्दोलन के बाद पुरानी पीढ़ी ने जिन मूल्यों आदर्षों के साथ जीवनयापन किया है उन्हें पिछले दो दषक के तूफानी बाजार ने मटियामेट कर दिया हैं। युवा पीढ़ी में सफलता पाने की तीव्र इच्छा तो है लेकिन उनमें धैर्य और संयम नहीं है। इसके चलते जीवन की असफलता उन्हें प्रतिषोधात्मक बना रही है। आज भारत में वैष्वीकरण के फलस्वरुप छोटे कुटीर उद्योग गाँव स्तर पर समाप्त हो गये हैं। लघु उद्योग पनपने से पहले खत्म हो गये, बड़े उद्योग बहुराश्ट्रीय कंपनियों में विलीन होते गये हैं। वैष्वीकरण विविध संस्कृति के स्थान पर एक मषीनवादी संस्कृति स्थापित कर रहा है। षिक्षण संस्थान भी स्वयं को वैष्वीकरण के दुश्प्रभाव से बचा नहीं पाये हैं। वर्तमान षिक्षण संस्थाएं ज्ञान एवं बोध का केन्द्र न होकर मुनाफे का केन्द्र हो गयी हैं। वैष्वीकरण के चलते ही प्रत्येक वर्श प्रतिभा पलायन होता है।

सकारात्मक प्रभाव :-

वैष्वीकरण की प्रक्रिया ने भारतीय समाज के अनेक क्षेत्रों पर सकारात्मक प्रभाव भी डाला है। इस प्रक्रिया ने जाति प्रथा के कठोर बंधनों को ढीला किया है। औद्योगीकरण एवं नगरीकरण के फलस्वरूप सभी जातियों के लोग मिलकर काम कर रहें हैं। वैष्वीकरण ने विष्व स्तर पर लोगों में जागरुकता पैदा की हैं। इसका प्रभाव महिलाओं में भी नजर आता है। परिवहन एवं संचार माध्यमों के तीव्र विकास से भी महिलाओं में ज्यादा जागरुकता आयी है। महिलायें हर क्षेत्र में पुरुशों के साथ-साथ काम कर रही हैं। इसके अलावा वैष्वीकरण की प्रक्रिया ने निजीकरण को भी बढ़ावा दिया है जिसने कॉर्पोरेट संस्कृति को जन्म दिया है। तकनीकी षिक्षा के क्षेत्र में जो सुधार हुआ है, उसमें भी वैष्वीकरण की महत्वपूर्ण भूमिका है। २१वीं सदी में हमारा ध्यान उच्च

Volume : 3 | Issue : 6 | June 2013 | ISSN - 2249-555X

विज्ञान और तकनीक पर केन्द्रित हैं। हम उसके सांस्कृतिक पक्ष पर बहुत कम विचार कर रहे हैं। मानवीय मूल्यों और मानसिकता पर उनका क्या प्रभाव होगा? क्या यह मषीनीकरण और अमानवीयकरण ही हमारे भविश्य हैं?१६ हमारी सामाजिक व्यवस्था भी चरमरा रही है। ऐसे में हर देष की जो संस्कृति, समूह-समुदाय की जो अपनी छवि होती है उसका क्या होगा? क्योंकि राजनीतिक स्वतंत्रता, आर्थिक विकास और सामाजिक समता के आदर्षो में अब सांस्कृतिक स्वतंत्रता का भी लक्ष्य जुड़ गया है।१७

निकालना होगा समाधान:-

अब हमें देखना होगा कि वैष्वीकरण का भारतीय सांस्कृतिक परम्परा पर जो विपरीत प्रभाव हुआ है, उसके बचाव के मार्ग क्या हैं। निष्चित रूप से संस्कृति की रक्षा का सवाल जटिल है। फिर भी हम मूकदर्षक नहीं रह सकते। हमें भारतीय संस्कृति के साथ-साथ बदलते विष्व का ध्यान रखकर राश्ट्रीयता की रक्षा भी करनी है। अत: हम बाजार को भले ही नहीं रोक सकते, लेकिन उपभोगवाद पर अंकुष लगाकर निर्णायक काम किया जा सकता है।

REFERENCE 1. Patnayak (2001) Imperialism and diffusion of development .P -18 | 2. Chin Christine B.N and Mittelman, James H. (1999) Conceptualizing Resistance to globalization and the Dilemmas of the state in the south London. | 3. Gilbin, Robert (2000)-The challenge of global capitalism –the world economy in the 21st | Century Prineeton. | ४. आलेख वैष्वीकरण बनाम वसुधैव कुटुम्बकम, दैनिक, हिन्दुस्तान, २७ अप्रैल, २००५, नई दिषाएँ, पृ.-४ द्य ५. ओषोटाइम्स इन्टरनेषनल अंक दिसम्बर २००१,पृ.-६ द्य ६. अज्ञेय की कविता:- एक मूल्याकंन, चन्द्रकान्त, बांदीबड़+कर, पृ.-९५ द्य ७. डॉ. देवव्रत चौबे का लेख वैष्वीकरण बनाम वसुधैव कुटुम्बकम, २७ अप्रैल २००५, नई दिषायें, पृ.-४ द्य ८. वही। द्य ९. गैरोला, वाचस्पति-भारतीय संस्कृति एवं कला १९७३ पृ.-६१ द्य १०. मैंल पद बतपजपबपेउ वृातदवसक डंजीमू १९५१ द्य ११. गुरुचरन दास- इंडिया अनवांउड, पैंगुइन, नई दिल्ली, १९९९। द्य १२. एच.एन. दीक्षित-संस्कृति पर हमले का सिलसिला, दैनिक जागरण ३० सितम्बर २००६। द्य १३. अजय कुमार -धर्म संस्कृति, साम्प्रदायिकता और वैष्वीकरण, उद्भावना प्रकाषन, दिल्ली, पृश्ठ-१०८, २००२। द्य १४. हाषिये पर भविश्य, नया ज्ञानोदय, अक्टूबर २००६। द्य १५. डॉ. सुशमा पाठक- बच्चों के संस्कार को प्रभावित करती केबिल संस्कृति प्रसारित -८ जून , २००६ ए.आइ. आर, फैंजाबादा द्य १६. ष्यामावरण दुबे-लेख:- भारतीयता की तलाष, पुस्तक:- परम्परा इतिहास बोध और संस्कृति, पृ. -५० द्य १७. वही, पृश्ठ-३१